सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, (LEF,Chennai)

जनवरी-फरवरी, 2006

शांति की वाचा

'और मैं उन्हें और अपनी पहाड़ी के आसपास का क्षेत्र आशिष का कारण बनाऊंगा और नियत ऋतु में वर्षा, हां, वे आशिष की वर्षा होंगी। (यहेजकेल ३४:२६)'

परमेश्वर हमारे निवास-स्थानों को खुशहाल और हमारी भू-भागों की उपज को समृद्ध बनाने के लिए उत्सुक हैं। कोई भी पिता अपने बच्चों को दुख झेलने के लिए पैदा नही करता। परमेश्वर यह वादा करते हैं कि वह अपने बच्चों को शान्ति और आशिष देगें। 'और मैं उनके साथ शान्ति की वाचा बान्धकर देश से हिंसक पशुओं को निकाल दूंगा जिससे कि वे जंगल में सुरक्षित रह सकें तथा वन में सो सकें। (यहेजकेल ३४:२५)'

वह तुमसे एक वाचा बान्धना चाहते हैं। 'मैदान के वृक्षों में भी फल लगेंगे, भूमि की उपज में वृद्धि होगी और वे अपने देश में सुरक्षित रहेंगे। जब मैं उनके जूए को तोड़कर उनको उनके हाथ से छुड़ा लूंगा जिन्होंने उनको दास बनाया था, तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। (यहेजकेल ३४:२७)'

हमेशा हम यह सोचते हैं कि लोग हमें दबा रहे हैं। मगर परमेश्वर कहते हैं कि प्रकृति भी आदमी को दबाती है। मनुष्य के पाप ने उसके आस पास की प्रकृति को प्रभावित किया है। प्रकृति जो मनुष्य के गुलाम होनी थी उसका मालिक

पृष्ठ २ पर..शांति की वाचा

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें

'परमेश्वर की चुनौती'

ETC *TV* **कार्यक्रम**

हर शनिवार सुबह ६:३० बजे

राज्य तेरा ही है

'क्यों कि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही है। (मत्ती ६:१३)'

तेरी ही महिमा है। परमेश्वर की महिमा को हम कभी ना चुराएं, इस विषय में हमें बहुत सावधान रहना है। मै ने यह देखा है कि कई बार, जब कुछ खास काम या ज़िम्मेवारियाँ कुछ लोगों को दिये जाते है, वे जल्दी ही, समझने लगते है कि वह उनका राज्य है। और वह उनका अपना मैदान है। नहीं, राज्य तुम्हारा नही है। यह राज्य मेरा नही है। यह राज्य परमेश्वर का है। हमारे दिलों में महिमा पाने की उस सहज लालसा का अन्त होना जरूरी है। हमें इस के ऊपर पूरी तरह से विजय पानी है।

क्रूस पर, प्रभु यीशु, जो आकाश और पृथ्वी को बनाने वाला है, उसे देखो। और साथ में उन आने-जाने वाले लोग जो सिर हिला हिला कर उनकी निन्दा कर रहे थे। कई दूसरे और वह सिपाही जो उनको ताने मार रहे थे, 'यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो क्रूस पर से उतर आ।' क्या उन्होंने अपनी महिमा की खोज की? नहीं। अपने लिए कोई प्रतिष्ठा हासिल नही की। हमें उनके पदचिन्हो में चलना है।

हम सब को कुछ प्रतिष्ठा हासिल करने की प्रबल इच्छा रहती है। हमें उस को क्रूस के पास त्यागना है। जहाँ तक मेरी बात है, मुझे अज्ञात रहना पसंद है। मुझे एक कोने में बैठना पसंद है जहाँ कोई मुझे नही पहचाने। तब मै अपना बाइबिल पढ़ सकता हूँ या अपना काम बिना रुकावट के कर सकता हूँ।

दुर्भाग्यवश, लगता है कि हमारे अज्ञात के दिन समाप्त हो रहे है। क्यों कि दूरदर्शन पर हमारे प्रसारणों के ज़रिये, ज्यादा से ज्यादा लोग मुझे पहचानने लगे है। हमारी गुहाटी सभा के बाद, हवाई अड्डे पर मुझे सचमुच आश्चर्य हुआ, जब एक पुलिस इन्सपेक्टर ने मुझे पहचान लिया। उन्होंने मेरी सहायता की, जब सिक्युरिटि के लोगों ने मुझे रोका था और मेरे ब्रीफकेस का पूरी तरह से तलाशी लेना चाहते थे। जाहिर है कि वह हमारे टी.वी. कार्यक्रमों को देख रहा है।

राज्य, पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही है। तुम्हारे जीने का और काम करने का ढंग अब तुम्हारे बच्चे देखेंगे। और यह भी कि तुम सचमुच इस पर जी रहे हो की नहीं। वे जान लेंगे की तुम सच में परमेश्वर के राज्य का निर्माण कर रहे हो या अपने राज्य का।

मेरे पिताजी ने कभी भी मेरे सामने कोई सांसारिक लक्ष्य नही रखा था। वह सिर्फ यह कहते थे, 'परमेश्वर की इच्छा को पूरी करो।' जब उन्होंने देखा की मैं पढ़ाई मे तेज नहीं हूँ, वह निराश नहीं हुए। जब उन्होंने देखा की मैं कही का नहीं रहा, वह उदास नही हुए। कभी भी उन्होंने नही कहा, 'तुम किसी लायक नही हो; गणित में जितनी क्षमता मुझमें है, लगता है उस मे से आधी भी तुम में नही है। तुम्हें यह करना है। तुम को उस में उत्तीर्ण होना है।' नही, वे कभी भी मुझ से ऐसे बाते नही कहते। उन्होंने मुझे सिखाया कि मैं परमेश्वर की इच्छा पूरी करूं। कैसी संपत्ति मेरे पिताजी ने मुझे दी है। वही है जिसकी मैं ने अपनी पूरी जिंदगी में खोज की है।

मैं ने अपने लिए कोई बड़ी बड़ी चीजों की तलाश नही की। मैं ने सिर्फ परमेश्वर की इच्छा की खोज की है। जब कुछ लोग सोचते है कि मैं एक कुशल आयोजक हूँ और बहुत दूर तक चीजों के बारे में सोचता हूँ, मैं कहता हूँ, 'नही, मैं एक नासमझ आदमी हूँ।' मैं नियमित रूप से परमेश्वर के पास जाता हूं। और उसकी विचारों को पाने के लिए इन्तजार करता हूँ। मेरा काम करने का तरीका वही है।

तुम अपने बच्चों को क्या सिखा रहे हो? आज कल कुछ माता-पिता अपने बच्चों को सिर्फ सांसारिक मूल्यों को ही सिखा रहे हैं। उनको देखकर मै बहुत उदास हो जाता हूँ। मेरा दिल टूट जाता है ऐसे माँ-बाप को देखकर जो एक वक्त पर परमेश्वर के लिए त्याग का जीवन जिये है। आज वे भी अपने बच्चों की सांसारिक धन-दौलत पर खुशी मना रहे है। अपने बच्चों की आध्यात्मिक गरीबी पर, लगता है उनको कोई चिन्ता नहीं है। इस तरह का विचार रखना हमें केवल आत्मा-विनाश के रस्ते पर ले जाता है। ऐसे लोगों को पश्चात्ताप करके अपने सांसारिक तौर-तरीके छोड़ देने चाहिए। इस संसार में हमारा उद्देश्य और लक्ष्य सांसारिक सफलता प्राप्त करने वाला रहे, सिर्फ यही नही है। बड़ी नौकरी, बड़ी पगार - हम सिर्फ इन बातों पर केन्द्रित

पृष्ठ २ पर..राज्य तेरा ही है...

पृष्ठ १ से..राज्य तेरा ही है

ना रहें। हमारे बच्चे पैसों के पीछे नहीं भागते रहें। उन्हें कहना चाहिए,'मैं परमेश्वर की इच्छा करने वाला हूँ।' मैं परमेश्वर की स्तुति करता हूँ कि आज भी ऐसे लोग हैं। हमारे नव युवक और युवति में ऐसी मिशनरी आत्मा होनी चाहिए। हमारे बच्चों को परमेश्वर के राज्य की निर्माण करने के लिए खड़ा होना है।

मेरे प्यारे लोगों, अपने आप को छोटे-छोटे लक्ष्यों तक सीमित मत करो। क्या अपने बच्चों के सामने आध्यात्मिक मूल्यों को रख रहे हो? कई बार जब एक बड़ा निर्णय लेने की बारी आती है लोग अपने आराम, सुविधा और भौतिक उन्नति को ही देखते हैं। कितनी दुःख की बात है! मगर यीशु ने हमें सिखाया कि पहले परमेश्वर के राज्य की खोज मे लगे रहे।

लोग सोचते है कि सारी ताकत पैसों में ही है। वे सोचते हैं कि पैसे ही सब कुछ करवा सकते हैं। हमें अपने बच्चों को यह सिखाना है कि जीवित परमेश्वर पर विश्वास रखें और उनका आसरा वही हों। जब मैं ऐसे माँ-बाप को देखता हूँ जो अपने बच्चों के दिमाग में ये बात बिठाए है कि पैसा ही सामर्थ्य है, मुझे यह बहुत मुश्किल जान पड़ता है कि कैसे लोगों को इन इस तरह के सोच-विचार से बाहर निकालूँ। वे लोग सोचते हैं कि पैसे से वह परमेश्वर के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। अधिकतर, मैं आज भी यह देखता हूँ कि जब पैसे की अधिकता हो तो विश्वास कम हो जाता है। जब पैसे ज्यादा हो जाते है तो प्यार कम हो जाता है। क्यों? यह एक झूठा भरोसा है। सामर्थ्य परमेश्वर का है। सामर्थ्य तेरा है - यह बात अपने दिलों पर लिखो।

हमें यह सिखाया गया है कि 'विश्वास' की विजय है। इसलिए मैं हमेशा यह ध्यान रखता हूँ कि विश्वास से सब चीजों को देखूँ, विश्वास से ही काम करूं और विश्वास के बोल ही बोलूं। जब कभी मेरे बेटा या बेटी, अविश्वास का एक शब्द भी बोले तो मुझे बहुत डर लगता है। क्यों? यह परमेश्वर के प्रति अपराध है। सामर्थ्य तेरा ही है! वह सामर्थ्य संसार तुम्हें नही दे सकता।

मेरे प्रिय मित्रों, यीशु मसीह के सामने भी चुनने के लिए वह रखा गया था जब शैतान ने उनको परखा था। मगर तुम और मेरे जैसे अपनी मानवीयता में, वे हर एक विषय में परखे गये, मगर वह कभी भी शैतान के सामने नही झुके थे।

हमें प्रभु पर प्रबल विश्वास रखना है। और उनके सही मार्गो से हमें कभी नही मुड़ना चाहिए। आइए अपने बच्चों को सही रास्ते से न भटकाएं। हमारे चारों ओर संसार यह कठोर प्रयास कर रहा है कि हमारे बच्चों को उस प्रतियोगिता के चक्र में फंसा ले। कृपया, अपने बच्चों को इन सांसारिक मूल्यों से शिक्षित ना करें।

आज कल दुनिया बहुत बलवान और सम्मोहित हो गयी है। मगर हमारा विश्वास केवल जीवित परमेश्वर में ही हो। अपने विश्वास की जाँच करो। प्रभु हमारी सहायता करें!

- जोशुआ दानिय्येल

पृष्ठ १ से..शांति की वाचा।

बन गयी। बारिश के अभाव का भय रहता है। अहाब को वह डर था मगर एलिय्याह को नही। जब एक मनुष्य परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है तब प्रकृति उसकी आज्ञा मानेगी।

'क्यों कि हम जानते हैं कि सम्पूर्ण सृष्टि मिलकर प्रसव-पीड़ा से अभी तक कराहती और तड़पती है। (रोमियों ८:२२)' क्यों? मनुष्य का पाप, प्रकृति को प्रभावित करता है। उसे भी प्रभावित करता है। उसके परिवार को प्रभावित करता है। उसके चारों ओर समाज को प्रभावित करता है। जब एक देश व्यभिचारी और हिंसक बन जाता है और उसमें न्याय नही दिया जाता , ऋतु अस्त-व्यस्त हो जाती हैं। नियत ऋतु में बारिश नही होती है। जब बारिश की जरूरत नही, फसल को नष्ट करने बाढ़ आ जाती है। और प्राकृतिक विपत्तियाँ धरती का विनाश करतीं हैं।

कई आदमी, जो अन्याय से पैसे कमाते हैं, उनके परिवारों में बे समय मौत होती रहेगी। एक बार, मेरे एक छात्र ने मुझ से चाहा कि मैं किराया पर लिया गये अपने दो मकानों में से एक में, थोड़े समय के लिए उसको रहने की इजाज़त दूँ। जिस मकान में हम रह रहे थे, अचानक अकारण हमें वहाँ से निकाल दिया। भारी वर्षा के दौरान मजबूरन हमें तम्बुओं में रहना पड़ा। मगर उस छात्र ने हमारा मकान हमें वापस नही दिया। उसका विवेक बिलकुल मरा हुआ था। थोड़े समय के बाद, जवानी में ही वह मर गया।

प्रकृति में ऐसी गुप्त शक्तियाँ हैं, जो उन लोगों को दबाती है जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नही करते है। अगर परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया जाये, उस क्षेत्र में समृद्धि होगी। अगर तुम उपवास रखकर, रोओ और पश्चताप करके, अपने पाप को दूर करोगे तो, तुम्हारे हानि में खोये हुए वर्षो को वापस देगा। परमेश्वर तुमसे एक वाचा बान्धना चाहते हैं। जब तुम पाप करते हो, तो उस वाचा से बाहर आजाते हो। और अन्धकार की शक्तियों की सामर्थ्य के तले आ जाते हो। अन्धकार का राज्य इन्तजार में हैं। जब तुम पाप करते हो, अपने को पकड़ने के लिए और नष्ट करने के लिए, दुष्टात्माओं को जगह देते हो।

पाप की वजह से प्रकृति कराह रही है। हमारे दफ़तर झूठ और लालच के पाप से भरे हैं। गरीबों को दबाया जाता हैं। बड़ा अन्याय किया जाता है। सब से अधर्मी व्यक्ति भी यह सोचता है कि वह उन्नति कर सकता है।

परमेश्वर कहते है कि उनके जन कभी अपमान नहीं सहेंगें। 'और जो देश मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था तुम उसमें बस जाओगे; तब तुम मेरी प्रजा होगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा। फिर मैं तुम्हें तुम्हारी सारी अशुद्धता से छुड़ाऊंगा, और अन्न को बुलाकर अत्यधिक बढ़ाऊंगा और मैं तुम्हारे बीच अकाल न पड़ने दूंगा। और मैं वृक्षों के फल और खेत की उपज बढ़ाऊंगा जिस से कि जाति जाति के मध्य अकाल के कारण फिर तुम्हारी निन्दा न हो। (यहेजकेल ३६:२८-३०)'

परमेश्वर खंडहरों का और विध्वस्त देशों का पुनः निर्माण करने के लिए उत्सुक हैं।

अस्वस्थ लोगों को और गरीबों को सुसमाचार सुनाना है। तुम में से कुछ लोग सिर्फ आराम से रहना चाहते हो। सुसमाचार के प्रचार में

For More Details Please contact on any of the following Addresses.

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
GWALIOR : L-95, Madhav Nagar, Gwalior-474002, Madhya Pradesh. Ph.0751-2636434
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

तुम अपनी छोटी उंगली तक हिलाना नहीं चाहते हो। मनुष्य के पापों तले दबकर, प्रकृति कराह रही है। परमेश्वर चाहते है कि वह मनुष्य के हृदय को रिहा करें और प्रकृति को मुक्त करें। और आदमी को प्रकृति के ऊपर स्वामी ठहराएं।

- एन दानिय्येल।

जैसा मैं हूं

इस गीत के बारे में यह कहना सही ही होगा कि यीशु के चरणों में पापियों को लाने के लिए किसी पावन गाने या गीत का उपयोग, इस से बढ़कर नही हुआ होगा।

इस गीत ने बड़ी अधिक संख्या में लोगों के दिलों को छुआ है; चाहे वह विशाल सुसमाचार सभाओं में शानदार गीत मंडली द्वारा गाया गया हो जहाँ सौइयों की तादाद में लोग आते है। या बड़े और छोटे सभा-समूहों में जहाँ एक या दो आते है।

जैसा मैं हूँ ....., सकारात्मकता का स्पष्ट और सीधा स्वर सुनाई पड़ता है। यह गीत एक पापी को उद्धारक के पास बुलाता है। यह गीत पाप में अंधे हुए, नीच और बेचारे को उसके सारे भय के बावजूद मसीह के पास आने का निमंत्रण देता है। उसके सारे गुनाहों के साथ और उसकी सारी अयोग्यताओं में वह ऐसे ही (उद्धारक के पास) आये।

पवित्र बाइबल के अनुसार यह निमन्त्रण, सही है। मसीह के पास आने से पहले अपने जीवन को सुधारना है - ऐसे कुछ भी नही है जो हम कर सकें जिससे कभी भी हम परमेश्वर की निगाहों में और ज्यादा स्वीकार किये जाएँ। बाइबल यह साफ़ सिखाता है कि परमेश्वर पापी से हर हालत में प्रेम करता है। और परमेश्वर चाहते है कि वह वैसे ही उनके पास आये।

केवल यीशु मसीह ही हमें पाप के दोष और दण्ड से मुक्त कर सकते हैं। जिन्दगी की सारी समस्याओं को सिर्फ वहीं सुलझा सकते हैं। शान्ति, आनंद और भविष्य की आशा देनेवाला एक मात्र वही हैं।

एक एंगलिक पादरी जो ब्राइटन इंग्लैण्ड के निवासी थे, उनकी पुत्री ने इस अनोखे गीत की रचना की। उसके हताश और निराशा के बेबस अनुभव से यह गीत उभरा है।

सन् १८३३ में एक दिन जब शार्लेट एलिअॅट चवालीसवे साल में थी, वह अजीब सी तनहाई और उदासी महसूस कर रही थी। परिवार के अन्य सदस्य कलीसिया के एक कार्यक्रम में गये हुए थे, जब की वह बिस्तर पर पड़ी हुई, अपाहिज, घर पर ही थी।

अपनी बिमारी से पहले, वह जिन्दगी की कई विलासताओं का आनंद उठाती हुई, एक खुश और चिंता-रहित जीवन बिता रही थी। एक चित्र-कलाकार होते हुई उसने कुछ हद तक लोकप्रियता भी हासिल की।

यह सारी गुजरी जिन्दगी, और अब, बीमारी की मारी हुई, जो उसके बचे जीवन पर अभिशाप था, वह बिल्कुल बेकार और कटी-सी महसूस कर रही थी। इस के अलावा, कई सालों से एक मसीही विश्वासी होते हुए भी, प्रभु के साथ अपने सम्बन्ध के विषय में उसे संदेह होने लगा। वह कैसे निश्चित कर सकती है कि उसकी आत्मा के विषय में सब कुशल से है।

अपने इस दुःख में, बाइबल के पदों को ढूंढ उन आधारों की एक सूची बनाने लगी, जिसके कारण वह यह विश्वास कर सके कि वह निश्चित ही परमेश्वर की बेटी है। उद्धारक के अनमोल लहू की सामर्थ्य को वह पहचानने लगी। विश्वास के द्वारा, जो उसके पासआते है, उन सब को ग्रहण करने का परमेश्वर का वादा उसने याद किया। शुद्ध करके, क्षमा और उद्धार देने की परमेश्वर की क्षमता को उसने याद किया।

जब वह इन महान सच्चाइयों पर मनन कर रही थी, उसे अपने मन में धीरज मिला। और शार्लेट एलिअॅट जिसे कविता लिखने का शौक भी था, जल्दी ही अपनी मन में उठते इन सारे खयालों को पंक्ति में लिखने लगी।

जैसा मैं हूँ बिन योग्यता,
पर तेरा लहू बहा था,
और तेरी आज्ञा है कि आ,
मसीह, मसीह, मैं आता हूँ।

यह कविता तुरन्त प्रसिद्ध हो गई और बड़ी संख्या में पूरे इंग्लैण्ड में बिकने लगी। और तो और कई अन्य भाषाओं में भी इसकी अनुवाद होने लगा।

शार्लेट एलिअॅट, अपनी बाकी जिन्दगी में कभी भी अच्छी सेहत का आनंद नही पाई। वह बिस्तर पर ही थी जब तक परमेश्वर ने उसे, आखिर में, स्वर्ग न बुला लिया। तब वह बयासी वर्ष की थी।

फिर भी, वह अपनी मृत्यु से पहले, उसे लोगों से हजार से ज्यादा, धन्यवाद और अभिनन्दन के पत्र मिले। लोग उसके प्रति आभारी थे कि उसने इस कविता की रचना की - 'जैसा मैं हूँ'।

मैं जैसा हूँ तू देवेगा
छुटकारा क्षमा शुद्धता
और मुझे ग्रहण करेगा
मसीह, हे परमेश्वर के मेमने, मैं आता हूँ।

- चुनी हुई

ताड़ना

'तब वे मेरे दर्शन के खोज करेंगे: जब वे संकट में पड़ेंगे तो मुझे लगन से खोजेंगे।' - होशे (५:१५)

हमें ताड़ना खुशी-खुशी स्वीकार करनी चाहिए। यह एक कठिन पाठ जरूर है। मगर पवित्र आत्मा में यह क्षमता है कि वह हमें यही पाठ पढ़ाए। हम प्रसन्न हो कि परमेश्वर अपने ही ढंग में काम कर रहे हैं। कभी कभी जिस काम को तुम करना नहीं चाहते हो, उसी को करना पड़े, और ऐसे करने में तुम्हें आनंद न आता हो, तुम्हें कैसे महसूस होता है? मेरा यह मतलब है कि तुम उस काम को करना नही चाहोगे। मगर यह पाते हो कि तुम्हारे किसी चहते को ऐसे करने से खुशी मिलती है। तो तुरंत यही मुश्किल काम तुम्हारे लिए एक सुखद अनुभव बन जाता है।

जब किसी व्यक्ति जिसका तुम बहुत आदर करते हो, वह बीमार और अस्वथ्य है। क्या कभी तुमको ऐसा नही लगा कि कम से कम एक या दो दिन, खुशी से उसके बदले तुम उसकी पीड़ा को सहो, ताकि उसे थोड़ा सा आराम मिले। कुछ समय तक एक अशक्त रहने में क्या तुम्हें खुशी नही होगी, ताकि तुम्हारा प्रिय व्यक्ति थोड़े समय अच्छी सेहद का आनंद उठाये? एक अधिक मात्रा में इसी उद्देश्य को अपनी आत्मा पर नियंत्रण करने दो। यह महसूस करने की कोशिश करो, 'यदि परमेश्वर को पसंद है तो मुझे भी पसंद है। अगर, परमेश्वर, यही तेरा इच्छा है, मेरी भी वही इच्छा होगी। यदि मेरे अधिक कोड़े खाने से आपको अधिक आदर-सम्मान मिले तो कोड़ों की संख्या बढ़ने दो। और आपका सम्मान बढ़ाने का मुझे मौका मिलेगा।'

क्रूस भी मधुर बन जाता है जब पवित्र आत्मा द्वारा हमारे जीवन इतने मधुर बन जाएँगे की हमारी इच्छा, परमेश्वर की इच्छा के साथ-साथ चलती है। एलीहु की तरह, हमें भी यह कहना सीखना चाहिए, 'मैंने सहा, मै सहूँगा, मुझे सब स्वीकार है।'

सत्य की परख!

परमेश्वर के द्वारा हम वीरता दिखाएंगे; और वही हमारे शत्रुओं को कुचल डालेगा। भजन संहिता (१०८:१३)

कोरी टेन बूम

सन्, १८९२, हॉलैण्ड में कोरी टेन बूम का जन्म हुआ था। एक प्यारे मसीही परिवार में वह सबसे छोटी बच्ची थी। और एक ऐसा परिवार जिसमें सब के दिल, घर और हाथ हर जरूरतमँद के लिए हमेशा खुले रहते थे। जब वह बड़ी हो रही थी, यह सहज बात ही है कि कोरी अपने आस-पास के लोगों की सहायता करने पहुँचती थी। अपने पिताजी के घडी-साज की दुकान में काम करने के अलावा उसने लड़कियों के लिए एक मसीही क्लब का आरंभ किया था। वह मानसिक विकलांगों के बीच में काम, अनाथ बच्चों की देखभाल में सहायता करना और स्कूलों में बाइबल की पाठ सिखाना, जैसे काम किया करती थी।

दूसरे विश्व युद्ध में हॉलैण्ड पर जर्मनी के आक्रमण के बाद, जिन लोगों को उसकी मदद की जरूरत थी ऐसे लोगों की सहायता करना भी खतरनाक हो गया था। जर्मनी का क्रूर तानाशाह, अडॉल्फ हिट्लर ने हॉलैण्ड में सभी यहूदी लोगों को गिरफ्तार करने के लिए अपने सैनिकों को भेजा था। उन सब को युद्ध बंदियों के शिविर में ले जाकर वहाँ बाद में उनको लाखों की तादाद में मार दिया जाता था। कोई भी यहूदियों की मदद करते पकड़ा जाता था, उसको भी यही भुगतना पड़ता था।

मगर कोरी और उसका परिवार उन जरूरतमन्द लोगों से अपना मुँह नहीं फेरे। वे डच 'अन्डर ग्रउंड' मूवमेन्ट नाम के गुप्त संचालन के भागीदार बने। ये लोग यहूदियों को छिपाते और सुरक्षित स्थानों पर बच निकलने के लिए मदद करते थे।

टेन बूम परिवार ने अपने घर में एक गुप्त कमरा बनवाया जिसे खोलने के लिए एक गुप्त दरवाजा था। वहाँ एक अलार्म व्यवस्था भी रखी, ताकि पूरे घर में खतरे का संकेत देने के लिए, घंटी बजा सकें। उनके साथ जो यहूदी रहते थे, उनसे यह अभ्यास भी करवाये कि वे कैसे उस गुप्त कमरे मे प्रवेश करे और छिप जायें।

पास ही रहने वाले एक डच्च आदमी द्वारा जर्मनी के लोगों के हाथ पकड़वाए जाने से पहले, कोरी और उसकी अस्सी कार्यकर्ताओं के दल ने सौइयों की तादाद में यहूदियों को बच निकलने के लिए सहायता की। २८ फरवरी, १९४४ के दिन, जर्मनी के सिपाही टेन बूम के घर पर धावा किया। उनमें से एक ने कोरी से पूछा कि कहाँ पर वह यहूदियों को छिपाकर रखे है। जब उसने उत्तर नही दिया तो उसने कोरी को बार-बार थप्पड़ मारा। उसको और उसके परिवार को गिरफ्तार कर लिया गया और वे अलग-अलग युद्ध कैदी शिविर में ले जाये गये। उसके पिता जो काफी बूढ़े थे, दस दिन बाद मर गये।

तीन महीनों के बाद, कोरी को रेवेन्सब्रूक मे लाया गया। रेवेन्सब्रूक एक जाना-माना हत्या शिविर था जहाँ कई औरतों को मार दिया जाता था। वहाँ अपनी बहन बेट्सी से फिर उसकी मुलाकात हुई। रेवेन्सब्रूक उसके एक सब से भयानक दुःस्वप्न का सच होना था! लम्बे घंटों तक कठिन परिश्रम, इमारतें चूहों से भरी, गरम करने की सुविधा के बगैर इमारतें, बहुत कम खाना और क्रूर पहरेदार। युद्ध के अंत से पहले ९६,००० औरतों की वहाँ मृत्यु हुई।

एक बार, जब वह बहुत बीमार थी और एक ठेले को धक्के देने की ताकत उसमे नही थी एक पहरेदार ने कोरी को कोड़े से गर्दन पर मारा। मगर बेट्सी के प्रति किये जा रहे बुरे बरताव को देखना उसके लिए एक बहुत कठिन बात थी। बेट्सी की सेहत हमेशा इतनी अच्छी नही रहती थी। कैद में उसकी और भी बुरी हालत हुई। फिर भी, काम करते रहने के लिए और कई बार सर्दी में घंटों तक सावधान खड़े रहने के लिए उसे मजबूर किया जाता था।

परमेश्वर पर उनके प्रबल विश्वास ने ही उनको, उस हर भयानक दिन को गुजारने में सहायता की है। दूसरी महिलाओं से वे प्यार से मिलते - और उनका धीरज बढ़ाते थे, और उसके साथ मिलकर प्रार्थना करते थे। उस भयानक जगह पर भी वे परमेश्वर के प्यार को महसूस करते थे। वास्तव में, बेट्सी ने कोरी से कहा कि जब वह बाहर निकलेंगे तब वह हर जगह घूमकर, लोगों को यह बताना चाहेगी कि इस पूरी दुनिया में कोई भी जगह इतनी अन्धकारमय नही है जहाँ परमेश्वर के प्यार की ज्योति नही चमक पाये। उसने हॉलैण्ड और जर्मनी में ऐसे घरों की स्थापना करने की इच्छा की, जहाँ, जो लोग युद्ध की वजह से टूटे है, उनको चंगाई मिल सके।

बेट्सी अपना सपना सच होते नही देख पाई। वह कैद में ही मर गयी। मगर कोरी ने आगे चलकर अपनी बहन की इच्छा को पूरा किया। उसके उम्र की सारी औरतों को मार डालने से थोड़े समय पहले, एक टंकण-गलती की वजह से उसे रिहा किया गया था, जिसे वह एक चमत्कार कहती थी।

युद्ध के बाद वह जर्मनी गयी। जिस विश्वास को परमेश्वर ने उसे दिया है और किस प्रकार यीशु हमारे शत्रुओं को भी माफ करने में सहायता करता है, यहा तक की उनसे प्यार कर सकें - इन सब बातों को वहाँ बड़ी बड़ी सभाओं में लोगों से वह कहती थी।

एक दिन सभा के बाद, वह द्वार पर खड़े लोगों से हाथ मिला रही थी। एक आदमी उसकी ओर चला आया और उसने कहा कि युद्ध के बाद वह एक मसीही बन गया। कोरी ने उस आदमी को पहचान लिया। रेवन्सब्रूक में उन अति क्रूर पहरेदारों में से वह एक था। उस आदमी ने कहा कि वह जानता है कि उन सारी बातों को जो उसने बीते दिनों में की हैं परमेश्वर ने उसे माफी दी है। मगर वे उससे भी माफी चाहता है।

जब वो हाथ आगे बढ़ा रहा था, कोरी को वह सब याद आया कि बेट्सी और कई हज़ारों लोगों को उसने कैसे यातना दी है। वो अपने मन में विचलित हो उठी। उसने सोचा कि वह उसको माफ नही कर पाएगी। मन मे उसने प्रार्थना की 'प्रभु, मैं उससे हाथ तो मिला सकती हूँ, मगर मैं अपनी भावनाओं को नही बदल सकती। केवल तुम ही वह कर सकते हो।'

उसने उसका हाथ अपने हाथों में लिया। तभी अचानक उसके हाथों में और बाद में पूरे शरीर में एक अजीब सा स्नेह भाव भर गया, और उन सारी कड़वी यादों को पिघला दिया।

अपनी आखों में आंसू लिये, उस आदमी जिसने एक वक्त उसे बहुत यातना दी थी उससे कहा, 'मैं अपने पूरी हृदय से तुम्हें माफ करती हूँ।' प्रिय पाठक, किसी ने तुम्हारे साथ किसी तरह का बहुत बुरा व्यवहार किया हो? क्या तुम ऐसे व्यक्ति को माफ कर पाये हो? क्या तुम में किसी दूसरे के साथ कोई बुरा बरताव किया हो? क्या उस व्यक्ति सेअपने माफी मांगी है।?

'परमेश्वर की निकटता का आनंद यदि आपने चख लिया हो तो उसके बिना जीवन बड़ा असह्नीय हो जाता है।'
- ओस्वॉल्ड सेंडरस।

'अगर परमेश्वर को पसंद है, मुझे भी पसंद है!'
- सी. एच. स्पर्जन

पृष्ठ ४

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।